# शीर्षक: विद्यालय स्टाफ के संवेगात्मक परिस्थितियों के प्रबंधन में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

National Institute of Educational Planning and Administration (Deemed to be University)
National Centre for School Leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद–छत्तीसगढ़
रायपुर–492007

**संरक्षण एवं मार्गदर्शन**

श्री राजेश सिंह राणा (आई.ए.एस.)
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर
डॉ. योगेश शिवहरे
अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर
श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा
उपसंचालक
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर
एवं
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कबीरधाम

**समन्वयन**

श्री डी. दर्शन
नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशीप अकादमी
एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

**माड्यूल लेखन समन्वयन**

श्री गौरव शर्मा

**लेखक**

टी.एन.मिश्रा

(व्याख्याता)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) कबीरधाम

# विद्यालय स्टाफ के संवेगात्मक परिस्थितियों के प्रबंधन में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

**उद्देश्य -**

स्कूल भावनात्मक संस्था है भावनाएं स्कूल में होने वाली अधिकांश प्रक्रियाओं जैसे - अध्ययन अध्यापन, शारीरिक शिक्षा, स्कूल प्रबंधन तथा विद्यालय के सर्वांगीण विकास में एक अभिन्न हिस्सा निभाती है। संस्था प्रमुख से अपेक्षा कि जाती है कि वह सकारात्मक संबंधों का पोषण करें तथा कर्मचारियों के भावनाओं को समझ कर स्कूल प्रबंधन में भावनात्मक (संवेगात्मक) पक्ष के प्रति संवेदनशीलता विकसित करें।

भारतीय समाज का आधार शांति, सौर्हाद, प्रेम और सहयोग है, जो हमारी सामाजिक पूंजी सोशल कैप्टिल) है इसे हमें शिक्षा के माध्यम से बढ़ावा देना है। हम सभी जानते है, विकास कितना भी करलें पर नैतिक मूल्य विहीन, सामाजिक सौहार्द विहीन समाज में हम लोग सुखी नहीं रह सकते।

**की -वर्ड -** संवेग का अर्थ एवं नियंत्रण, संस्था प्रमुख द्वारा संवेगात्मक परिस्थितियों का प्रबंधन, आत्म जागरूकता, आत्म नियंत्रण, सहानुभूति एवं समानुभूति, मानसिक स्वास्थ्य।

**प्रस्तावना** - शिक्षक समाज की पूंजी है, समाज राष्ट्र के भविष्य के निर्माता है जिनके कार्य एवं व्यवहार से समाज का पथ प्रदर्शन होता है इसलिए शिक्षण पेशे को सर्वश्रेष्ठ एवं आदर्श माना जाता है - समाज का नेतृत्व कर्ता के साथ ही सामाजिक अभियंता Social Engineer कहा जाता है और इसे ज्ञान का संवाहक Carriar of Knowladge भी कहा जाता है । कोठारी कमीषन अध्यापकों को राष्ट्र निर्माता की संज्ञा देता है और राष्ट्र का निर्माण कक्षा में होता है। संस्था प्रमुख अध्यापकों का अध्यापक कहा जाता है और वे स्वयं कक्षा षिक्षण करते हुए आदर्श शिक्षक के रूप में नेतृत्वकर्ता तथा विद्यालय का बेहतर प्रबंधन, समय प्रबंधन, कक्षा शिक्षण प्रबंधन तथा समस्त प्रशासनिक प्रबंधन को बेहतर करते हुए कुशल प्रबंधक के रूप में कार्य करता है। विद्यालय में अनुशासन स्थापित करना, साथ ही विद्यालय के हर कार्यो का निरीक्षण करना और उचित मार्गदर्शन देना यह प्रमुख दायित्व है। इस तरह संस्था प्रमुख का उत्तरदायित्व बहुत व्यापक है ।

संस्था प्रमुख की भूमिका बहुआयामी होती है जो शैक्षिक नेतृत्व कर्ता के साथ स्थानीय समुदाय का मार्गदर्शक होता है इस तरह संस्था प्रमुख के सफल निर्देशन, कर्तव्य पालन एवं उच्चतम उत्तरदायित्वों पर विद्यालय का प्रगति तथा विद्यार्थियों का उज्जवल भविष्य निर्भर करता है।

प्रश्न 1. संस्था प्रमुख को अध्यापकों का अध्यापक क्यों कहा जाता है ?

.....

.....

.....

प्रश्न 2. संस्था प्रमुख की भूमिका बहुआयामी है इस कथन की व्याख्या कीजिये ?

.....

.....

.....

संवेग का अर्थ एवं नियंत्रण - संवेग शब्द अंग्रेजी के Emotion शब्द से बना है जिसकों लैटिन भाषा के Emovere शब्द से उत्पत्ति मानी जाती है जिसका प्रयोग उत्तेजित होने एवं उथल-पुथल आदि शब्दों से किया जाता है। जब मनुष्य का शरीर उद्दीप्त होता है इसी अवस्था को संवेग का नाम दिया गया है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्रमुख निम्नलिखित संवेग हैं - भय, क्रोध, घृणा, आश्चर्य, वात्सल्य, भूख, आमोद, विसाद, कामुकता, हर्ष, रचनात्मकता, एकाकीपन, श्रेष्ठता की भावना। संवेग एक भावनात्मक अनुभूति है जो व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक उत्तेजनापूर्ण अवस्था तथा सामाजीकृत आंतरिक समायोजन के साथ जुड़ी होती है जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा प्रदर्षित बाहरी व्यवहार द्वारा होती है। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया की धुरी है, शिक्षक के व्यवहार अभिवृत्ति और योग्यता का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है। इसलिए विद्यालय में शिक्षा की प्रक्रिया के प्रगति हेतु शिक्षकों का मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना अति आवश्यक है, कभी-कभी हमें समाचार पत्रों के माध्यम से ज्ञात होता है कि बच्चों के प्रति शिक्षक का व्यवहार क्रूरता पूर्ण हो जाता है यह अव्यवहारिक है।

कुछ दिन पूर्व कबीरधाम जिले में विकास खण्ड बोड़ला की घटना समाचार पत्र दैनिक भास्कर दिनांक - 04.03.2023

# क्रूरता: पुराने मिडिल स्कूल परिसर के नल में नहा रहे छात्र की कर दी पिटाई

## चौकीदार की शिकायत पर संकुल समन्वयक पर जुर्म दर्ज

भास्कर न्यूज | कवर्धा

चिल्फी थाना क्षेत्र के ग्राम बोक्करखार स्थित बालक छात्रावास के एक छात्र की पिटाई का मामला सामने आया है। मामले में संकुल समन्वयक के खिलाफ धारा 294, 323 के तहत एफआईआर दर्ज किया गया है। फिलहाल आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई है।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक पीड़ित विजय कुमार धुर्वे बोक्करखार छात्रावास में रहकर पढ़ाई करता है। गुरुवार को हॉस्टल के कुछ छात्रों के साथ वह पुराने मिडिल स्कूल परिसर के नल में नहाने के लिए गया था। नहाने के बाद छात्र कपड़ा पहन रहा था, तभी आरोपी संकुल समन्वयक गेंदसिंह टेकाम वहां पहुंचा। गाली-गलौच करते हुए छात्र विजय के साथ मारपीट की। पिटाई के चलते छात्र की पीठ पर निशान पड़ गए हैं। मामले की शिकायत छात्रावास के चौकीदार ने थाने में की। इस पर पुलिस ने जांच के बाद आरोपी संकुल समन्वयक गेंद सिंह टेकाम के खिलाफ धारा 294, 323 के तहत अपराध दर्ज किया है।

कवर्धा. पिटाई से छात्र की पीठ पर निशान।

यह ध्यान रखना होगा कि शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ हो तथा अपने संवेगो को नियंत्रित कर बच्चों के साथ समुचित व्यवहार करें। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ कुजूस्वामी के अनुसार -''दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्वकांक्षाओं और आर्दशों में संतुलन रखने की योग्यता, इसका अर्थ है- जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने और स्वीकार करने की योग्यता है''

प्रश्न 3. शिक्षक का संवेग का विद्यार्थियों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

……

……

प्रश्न 4. शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया की धुरी है, इस कथन पर अपना विचार व्यक्त कीजिये ?

……

……

संस्था प्रमुख द्वारा संवेगात्मक परिस्थितियों का प्रबंधन - संस्था प्रमुख को समय प्रबंधन एवं व्यवहार प्रबंधन के द्वारा संस्था में कार्यो को व्यवस्थित करने एवं पूर्ण करने में सहयोग मिलता है। शिक्षण पेशे को दुनियाँ में कई जगहों पर अत्यधिक तनावपूर्ण माना जाता है - (जैपसन एण्ड फारेस्ट - 2006) तनाव एक नकारात्मक घटना है जो अनियंत्रित समय तक और बढ़े हुए दबाव की स्थितियों में विकसित होती है। संस्था प्रमुख से अपेक्षा की जाती है वे सकारात्मक संबंधों का पोषण करने के साथ-साथ अपनी और कर्मचारियों के संवेगात्मक भावनाओं को प्रबंधन करते हुए व्यावहारिक पक्ष के प्रति संवेदनशीलता विकसित करें। प्रायः देखा जाता है कि जो संस्था प्रमुख भावनात्मक रूप से अधिक सशक्त होते है उनमें अपने संवेगों को नियंत्रित कर स्कूल संचालन करने की क्षमता अत्यधिक होती है वे अधिक करिश्माई होते है और उनके विद्यालय का परीक्षा परीणाम अन्य विद्यालय से श्रेष्ठ होता है।

प्रश्न 5. समाज में शिक्षण पेशे को तनावपूर्ण माना जाता है। इस कथन पर आप अपना विचार स्पष्ट करें।

……

……

आत्म जागरूकता ही आत्म नियंत्रण है - संस्था प्रमुख को विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है जो संस्था में पथ-प्रदर्शक, नेतृत्वकर्ता, निर्देशक, पर्यवेक्षक, निरीक्षण कर्ता तथा परामर्शदाता के रूप में होता है। विद्यालय समाज को व्यवस्थित करने का कार्य करता है तथा समाज विद्यालय को व्यवस्थित करने का कार्य करता है विद्यालय

समाज के लिए और समाज विद्यालय के लिए व्यवस्था को सुनिश्चित करता है। शिक्षा, मानव विकास की सशक्त प्रक्रिया के साथ-साथ राष्ट्र विकास और जन शक्ति नियोजन का आधार मानी जाती है। साथ ही यह एक मानवीय विकास के (व्यवसाय) के रूप में विकसित हो रही है। संस्था प्रमुख विद्यार्थियों में आत्म अनुशासन का पाठ सीखा करके उनमें आत्म-नियंत्रण का भाव जगा सकते है। क्योकि कहा गया है Self Discipline is better than force Discipline स्व अनुशासन, अर्थात आत्म अनुशासन जबरदस्ती अनुशासन से बेहतर होता है।

प्रश्न 6. विद्यार्थियों में आत्मानुशासन कैसे विकसित कैसे करेंगे।

……

……

सहानुभूति एवं समानुभूति - संस्था प्रमुख विद्यालय स्टॉफ के साथ सहानुभूति एवं समानुभूति के साथ व्यवहार करता है तो अपने कार्य को बेहतर ढंग से कर सकता है। सहानुभूति एवं समानुभूति एक संवेगात्मक भावना एवं गुण है। डेनियल गोलमन- संवेगात्मक ज्ञान का प्रतिपादन किया कि संवेगात्मक बुद्धिलब्धि (EQ), बुद्धिलब्धि (IQ) अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। सफलता में 80% संवेगात्मक बुद्धि का महत्व है। उन्होने कहा कि 21वीं सदी महिलाओ की है, क्योंकि महिलाओं में अत्यधिक संवेगात्मक बुद्धि (EQ) होती है। सहानुभूति का अर्थ दूसरों की संवेगों, मनः स्थितियों को समझकर उनके भावनाओं के स्तर पर अनुभव कर व्यवहार करना तथा समानुभूति दूसरो की तरह स्वयं अनुभव करना। यहॉ व्यक्ति के चेतना में स्व तथा पर का अंतर मिटने लगता है। यदि शिक्षक सहानुभूति पूर्वक एवं समानुभूति पूर्वक बच्चों के साथ व्यवहार करता है तो अच्छी तरह अपने कार्य को कर सकता है

तथा समाज के लिए उपयोगी हो सकता है अन्यथा कार्य व्यवहार समाज के लिए अहितकर हो जाता है, उदाहरण - बस्तर जिले में छोटे मुरमा स्कूल के षिक्षक प्रमोद कुमार यादव जिन्हें बच्चे डेंगा गुरूजी के नाम से संबोधित करते थे जिन पर आरोप लगा कि उसने कक्षा पांचवी में पढ़ने वाले दो सगे भाईयों का सर आपस में टकरा दिया जिससे उनकी मृत्यु हो गई, शिक्षक एक बहुत संवेदनशील प्राणी होता है उस पर इस तरह से घटना का होना उचित नहीं है। मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षक का व्यवहार समाज के लिए पथ-दर्शक होता है।

प्रश्न 7. शिक्षकों में सहानुभूति एवं समानुभूति का गुण होना क्यों आवश्यक है ?

……

……

संवेगात्मक परिस्थितियों का नियंत्रण - संस्था प्रमुख द्वारा अपने संवेगो का नियंत्रण कर अपने स्टाफ के सहकर्मियों को भी संवेगों का प्रबंधन करने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

संवेगात्मक परिस्थियों के प्रबंधन में कुशल संस्था प्रमुख के लक्षण –

1. आशावादी होते है।
2. संवेदनशीलता पाई जाती है।
3. समस्या समाधान की बुद्धि होती है।
4. नेतृत्व का गुण बहुत होता है।
5. निर्णय करने की क्षमता होती है।

''समाज में अध्यापक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराओं और तकनीकी कौशल को पहुंचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्जवलित रखने में सहायता देता है'' - डॉ. राधाकृष्णन

संस्था प्रमुख अपने संस्था के विकास के लिए अपने सहयोगियों के भावनाओं को समझकर व्यवहार करते है तथा शिक्षक कक्षा संचालन में बच्चों की रूचि को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करते है।

सर्व शिक्षा अभियान
॥ विद्या ददाति विनयं ॥

अच्छे शिक्षक में संवेगो को नियंत्रित रखने तथा वांछनीय ढंग से व्यक्त करने की क्षमता होती है, ऐसे शिक्षक क्रोध, भय, इर्ष्या, प्रेम घृणा आदि संवेगों से अस्त-व्यस्त नहीं होते। विपरीत परिस्थितयों में भी सभी कार्यो को प्रसन्नता तथा लगन क साथ करते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ्य व्यक्ति अति प्रतिक्रिया Over Reaction या अल्प प्रतिक्रिया under Reaction की प्रवृति से प्रायः मुक्त रहते है। मानसिक रूप से स्वस्थ्य संस्था प्रमुख तनाव, द्वन्द से मुक्त होकर आशावादी होता है तथा सहकर्मियों पर विश्वास रखते हुए एवं उन्हे विश्वास में लेते हुए कार्य कार्य करता है। विद्यालय की सफलता संस्था प्रमुख के कर्तव्य निष्ठा एवं नेतृत्व क्षमता पर निर्भर है।

प्रश्न 8. विभिन्न संवेगात्मक परिस्थितियों को नियंत्रित करने के लिए संस्था प्रमुख में कौन-कौन से गुण होना आवश्यक है।

……

……

**संदर्भित ग्रंथ** -

1.शिक्षा मनोविज्ञान, लेखक - शिरीष पाल सिंह

2.अध्यापक शिक्षा गुणात्मक विकास - डॉ. मयाशंकर सिंह

3.प्राचार्य प्रशिक्षण संदर्शिका - 2011